



पत्र-पुष्प



“कर्मयोग द्वारा कर्मातीत स्थिति बनाने के लिए विशेष प्रेरणायें (याद पत्र)”

(20-01-21)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा योगयुक्त, युक्तियुक्त स्थिति में रह सम्पन्नता वा सम्पूर्णता की मंजिल को समीप लाने वाले, करावनहार की स्मृति से सदा कर्मयोगी बनने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश-विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ने परमात्म स्नेह का सबूत देते हुए चारों ओर अव्यक्ति मास में बहुत अच्छी तपस्या की है। मधुबन बेहद घर के समाचार तो आप सब सुनते, देखते रहते हो। कैसे बाबा अपने बच्चों को विशेष नई-नई अनुभूतियां कराता रहता है। बाबा कहते बच्चे, अभी समय प्रमाण चारों ओर टेन्शन का वातावरण बढ़ता जा रहा है, सभी खींचातान वाली जीवन का अनुभव कर रहे हैं। ऐसे समय पर चारों ओर के टेन्शन का प्रभाव रूहानी पाण्डव सेना पर न पड़े, इसके लिए सभी सेवाकेन्द्रों पर याद की यात्रा के विशेष कार्यक्रम सदा चलते रहें। समय प्रमाण सर्विस तो बढ़नी ही है। सम्बन्ध-सम्पर्क में भी अनेक आत्मायें आयेंगी, जैसी आत्मायें आ रही हैं, वैसी ही उन्हें पालना भी देनी है।

तो प्यारे बापदादा के ऐसे विशेष इशारे सुनते हुए विचार आया कि अपने हर सेवाकेन्द्र पर सदा ही योग के कार्यक्रम चलते रहें, इसके लिए मधुबन से पत्र-पुष्प के साथ अव्यक्त इशारों में हर मास विशेष तपस्या की ही प्वाइंट्स आती रहेंगी, जिस पर आप सब विशेष मनन-चिंतन वा अभ्यास करते हुए, क्लास के भाई बहिनों में भी वही उमंग-उत्साह भरना जी। अभी बाबा के हर स्थान ऐसा शान्ति-कुण्ड बनें, जो चारों ओर शान्ति के प्रकम्पन फैलते रहें। हम सब बाबा के बच्चों को विशेष शान्तिदूत बन विश्व की दुःखी अशान्त आत्माओं को शान्ति और शक्ति की सकाश देनी है। प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाने की सेवा करनी है।

साथ-साथ जैसे हम सबके प्यारे ब्रह्मा बाबा अपनी कर्मयोगी स्टेज द्वारा कर्मातीत अवस्था की समीपता का अनुभव करते, सम्पन्न और सम्पूर्ण बन गये। उनके सामने कोई किसी भी वृत्ति से आया, लौकिक कार्य अर्थ भी आया तो उसने लौकिक कार्य के बीच अलौकिक दृष्टि वा अलौकिक महावाक्य, वरदान रूप में सुनें, अनुभव किये। तो अभी हम सबको भी बाप की समानता में समीप आना है। कारोबार करते, कर्म बन्धन से अतीत रह, कर्मातीत स्टेज का अनुभव करना और कराना है। बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख सभी रूहानियत से सम्पन्न, अलौकिक जीवन का अनुभव कर रहे हो ना! सेवाओं की रूपरेखा में तो बहुत बड़ा परिवर्तन आया ही है। सभी ने मन्सा सेवा के भी बहुत अच्छे अनुभव किये हैं। अभी बाबा चाहते हैं - मेरा एक एक बच्चा ऐसा साक्षात मूर्त बनें जो चारों ओर अव्यक्त फरिश्तों का साक्षात्कार हो। ऐसी लहर फैलाने का अब समय आ गया है, इसी से हर आत्मा आकर्षित हो, बाबा के समीप आयेगी और अपना जन्म सिद्ध अधिकार लेगी। प्रत्यक्षता का आवाज बुलन्द होगा।

तो आओ, हम सभी विस्तार को सार में समेट, एक बाबा की यादों में सदा लवलीन रहें। मन की स्थिति को बहुत-बहुत निर्मल, शुद्ध बनाकर विश्व कल्याण के रहे हुए कार्य को सम्पन्न करने में अपना-अपना सहयोग दें। सदा अपनी ईश्वरीय शान में रह अचल-अडोल, एकरस स्थिति में रहें और सबको इसी स्थिति में स्थित रहने की प्रेरणा देते चलें। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. रतनमोहिनी



ये अव्यक्त इशारे



फरवरी 2021 - तपस्वी जीवन बनाने के लिए होमवर्क

(अ) आत्मिक स्थिति के अभ्यास द्वारा शान्ति और शुभ भावना सम्पन्न बनो

1) अनेक प्रकार के व्यक्ति, वैभव अथवा अनेक प्रकार की वस्तुओं के सम्पर्क में आते आत्मिक भाव और अनासक्त भाव धारण करो। यह वैभव और वस्तुयें अनासक्त के आगे दासी के रूप में होंगी और आसक्त भाव वाले के आगे चुम्बक की तरह फंसाने वाली होंगी।

2) अब ऐसे ट्रान्सपेरेंट (पारदर्शी) हो जाओ जो आपके शरीर के अन्दर आत्मा विराजमान है, वह स्पष्ट सभी को दिखाई दे। आपका आत्मिक स्वरूप उन्हीं को अपने आत्मिक स्वरूप का साक्षात्कार कराये, इसको ही कहते हैं अव्यक्त वा आत्मिक स्थिति का अनुभव कराना।

3) जब स्वयं को अकालमूर्त आत्मा समझेंगे तब अकाले मृत्यु से, अकाल से, सर्व समस्याओं से बच सकेंगे। मानसिक चिन्तायें, मानसिक परिस्थितियों को हटाने का एक ही साधन है – अपने इस पुराने शरीर के भान को मिटाना। देह-अभिमान को मिटाने से सर्व परिस्थितियाँ मिट जायेंगी।

4) जैसे यह देह स्पष्ट दिखाई देती है वैसे अपनी आत्मा का स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे अर्थात् अनुभव में आये। मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई न दे वा स्मृति में न आये। ऐसे निरन्तर तपस्वी बनो तब हर आत्मा के प्रति कल्याण का शुभ संकल्प उत्पन्न होगा।

5) जैसे अनेक जन्म अपने देह के स्वरूप की स्मृति नेचुरल रही है वैसे ही अपने असली स्वरूप की स्मृति का अनुभव थोड़ा समय भी नहीं करेंगे क्या? यह पहला पाठ कम्पलीट करो तब अपनी आत्म-अभिमानी स्थिति द्वारा सर्व आत्माओं को साक्षात्कार कराने के निमित्त बनेंगे।

6) किसी कमजोर आत्मा की कमजोरी को न देखो। यह स्मृति में रहे कि वैराइटी आत्मायें हैं। सबके प्रति आत्मिक दृष्टि रहे। आत्मा के रूप में उनको स्मृति में लाने से पावर दे सकेंगे। आत्मा बोल रही है, आत्मा के यह संस्कार हैं, यह पाठ पक्का करो तो सबके प्रति स्वतः शुभ भावना रहेगी।

7) आत्मा शब्द स्मृति में आने से ही रुहानियत के साथ शुभ-

भावना भी आ जाती है। पवित्र दृष्टि हो जाती है। चाहे भल कोई गाली भी दे रहा हो लेकिन यह स्मृति रहे कि यह आत्मा तमोगुणी पार्ट बजा रही है तो उससे नफ़रत नहीं करेंगे, उसके प्रति भी शुभ भावना बनी रहेगी।

8) जैसे कोई भी व्यक्ति दर्पण के सामने खड़ा होते ही स्वयं का साक्षात्कार कर लेता है, वैसे आपकी आत्मिक स्थिति, शक्ति रूपी दर्पण के आगे कोई भी आत्मा आवे तो वह एक सेकेण्ड में स्व स्वरूप का दर्शन वा साक्षात्कार कर ले। आपके हर कर्म में, हर चलन में रुहानियत की अट्रेक्शन हो। जो स्वच्छ, आत्मिक बल वाली आत्मायें हैं वह सबको अपनी ओर आकर्षित जरूर करती हैं।

9) जैसे एटम बम एक स्थान पर छोड़ने से चारों ओर उसके अंश फैल जाते हैं – वह एटम बम है और यह आत्मिक बम है। इसका प्रभाव अनेक आत्माओं को आकर्षित करेगा और सहज ही प्रजा की वृद्धि हो जायेगी इसलिए संगठित रूप में आत्मिक स्वरूप के अभ्यास को बढ़ाओ, स्मृति-स्वरूप बनो तो वायुमण्डल पॉवरफुल हो जायेगा।

10) ऐसा कोई भी ब्राह्मण नहीं होगा जो आत्म-अभिमानी बनने का पुरुषार्थी न हो। लेकिन निरन्तर आत्म-अभिमानी, जिससे कर्मेन्द्रियों के ऊपर सम्पूर्ण विजय हो जाए, हरेक कर्मेन्द्रिय सतोप्रधान स्वच्छ हो जाए, देह के पुराने संस्कार और सम्बन्ध से सम्पूर्ण मरजीवा हो जाए, इस पुरुषार्थ से ही नम्बर बनते हैं।

11) किसी भी विघ्न से मुक्त होने की युक्ति है - सेकेण्ड में स्वयं का स्वरूप अर्थात् आत्मिक ज्योति स्वरूप स्मृति में आ जाए और कर्म में निमित्त भाव का स्वरूप - इस डबल लाइट स्वरूप में स्थित हो जाओ तो सेकेण्ड में हाई जम्प दे देंगे। कोई भी विघ्न आगे बढ़ने में रूकावट नहीं डाल सकेगा।

12) याद में निरन्तर रहने का सहज साधन है - प्रवृत्ति में रहते पर-वृत्ति में रहना। पर-वृत्ति अर्थात् आत्मिक रूप। ऐसे आत्मिक रूप में रहने वाला सदा न्यारा और बाप का प्यारा होगा। कुछ भी करेगा लेकिन ऐसे महसूस होगा जैसे काम नहीं किया

लेकिन खेल किया है। यह रूहानी नयन, यह रूहानी मूर्त ऐसे दिव्य दर्पण बन जायेंगे जिस दर्पण में हर आत्मा बिना मेहनत के आत्मिक स्वरूप ही देखेगी।

13) जैसे अन्य आत्माओं को सेवा की भावना से देखते हो, बोलते हो, वैसे निमित्त बने हुए लौकिक परिवार की आत्माओं को भी उसी प्रमाण चलाते रहो। लौकिक में अलौकिक स्मृति, सदा सेवाधारी की, ट्रस्टीपन की स्मृति, सर्व प्रति आत्मिक भाव

से शुभ कल्याण की, श्रेष्ठ बनाने की शुभ भावना रखो। हृद में नहीं आओ।

14) सदा बेहद की आत्मिक दृष्टि, भाई-भाई के सम्बन्ध की वृत्ति से किसी भी आत्मा के प्रति शुभ भावना रखने का फल जरूर प्राप्त होता है इसलिए पुरुषार्थ से थको नहीं, दिलशिकस्त भी नहीं बनो। निश्चयबुद्धि हो, मेरेपन के सम्बन्ध से न्यारे हो शान्ति और शक्ति का सहयोग आत्माओं को देते रहो।

(ब) आत्मिक प्यार की मूर्ति बनो

15) ब्राह्मण संगठन का आधार आत्मिक प्यार है। चलते-फिरते आत्मिक प्यार की वृत्ति, बोल, सम्बन्ध-सम्पर्क अर्थात् कर्म हो। ब्राह्मण जीवन की नेचुरल नेचर मास्टर प्रेम का सागर है। इसी नेचर को धारण करो।

16) समय प्रमाण लव और लॉ का बैलेन्स रखो लेकिन लॉ में भी लव महसूस हो। इसके लिए आत्मिक प्यार की मूर्ति बनो तब हर समस्या को हल करने में सहयोगी बन सकेंगे। शिक्षा के साथ सहयोग देना ही आत्मिक प्यार की मूर्ति बनना है।

17) आत्मिक स्वरूप में रहने से लौकिक में रहते भी अलौकिकता का अनुभव करेंगे। अपने को आत्मिक रूप में न्यारा समझना है। कर्तव्य से न्यारा होना तो सहज है, उससे दुनिया को प्यारे नहीं लगेगे, दुनिया को प्यारे तब लगेगे जब शरीर से न्यारी आत्मा रूप में कार्य करेंगे। इससे ही मन के प्रिय, प्रभु प्रिय और लोक प्रिय बनेंगे।

18) कभी कहीं पर जाओ तो यही लक्ष्य रखो कि जहाँ जायें वहाँ यादगार कायम करें, वह तब होगा जब आत्मिक प्यार की सौगात साथ होगी। यह आत्मिक प्यार (स्नेह) पत्थर को भी पानी कर देगा। इससे किसी पर भी विजय हो सकती है।

19) आत्मिक प्यार से जितना एक दो के स्नेही सहयोगी बनते हो उतना ही माया के विघ्न हटाने में भी सहयोग मिलता है। सहयोग देना अर्थात् सहयोग लेना। तो परिवार में आत्मिक स्नेह देना है और माया पर विजय पाने का सहयोग लेना है। यह लेन-देन का हिसाब है।

20) जैसे कपड़े सिलाई करने का साधन धागा होता है, वैसे ही भविष्य सम्बन्ध जोड़ने का साधन है आत्मिक स्नेह रूपी धागा। जोड़ने का समय और स्थान यह है। लेकिन यह ईश्वरीय स्नेह वा आत्मिक स्नेह तब जुड़ सकता है जब अनेक देहधारियों से

स्वार्थ का स्नेह समाप्त हो जाता है।

21) जहाँ देखते हो, जिसको देखते हो चलते फिरते उसका आत्मिक स्वरूप ही दिखाई दे। जैसे जब किसी के नैनों में खराबी होती है तो उसे एक समय में दो चीज़ें दिखाई पड़ती हैं। ऐसे यहाँ भी अगर दृष्टि पूर्ण नहीं बदली है तो देही और देह दो चीज़ें दिखाई देंगी।

22) अभी आत्मिक स्थिति की स्मृति कभी-कभी देह के पर्दे के अन्दर छिप जाती है, इसलिए यह स्मृति भी पर्दे के अन्दर दिखाई देती है। आत्मिक स्मृति स्पष्ट और बहुत समय रहने से अपना भविष्य वर्सा अथवा अपने भविष्य के संस्कार स्वरूप में सामने आयेंगे। भविष्य संस्कारों को स्पष्ट स्मृति में लाने के लिए आत्मिक स्वरूप की स्मृति सदाकाल और स्पष्ट रहे।

23) जैसे अनेक जन्म अपने देह के स्वरूप की स्मृति नेचुरल रही है, वैसे ही अपने असली स्वरूप की स्मृति का अनुभव होना चाहिए। इस आत्म-अभिमानि स्थिति से सर्व आत्माओं को साक्षात्कार कराने के निमित्त बनेंगे। यही स्थिति विजयी माला का दाना बना देगी।

24) आत्मा बोल रही है। आत्मा के यह संस्कार हैं.... यह पहला पाठ पक्का करो। आत्मा शब्द स्मृति में आते ही रुहानियत, शुभ भावना आ जायेगी। दृष्टि पवित्र हो जायेगी। सर्व के स्नेही, सहयोगी बन जायेंगे।

25) शरीर में होते निराकारी आत्मिक रूप में स्थित रहो तो यह साकार रूप गायब हो जायेगा। जैसे साकार बाप को देखा, व्यक्त गायब हो अव्यक्त दिखाई देता था। तो ऐसी अवस्था बनाने के लिए मन्सा में निराकारी स्टेज, वाचा में निरहंकारी और कर्म में निर्विकारी स्टेज हो। संकल्प में भी कोई विकार का अंश न हो।

26) पहला पाठ आत्मिक स्मृति का पक्का करो। आत्मा इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कर रही है। तो अन्य आत्माओं का भी कर्म देखते हुए यह स्मृति रहेगी कि यह भी आत्मा कर्म कर रही है। ऐसे अलौकिक दृष्टि, जिसको देखो आत्मा रूप में देखो, इससे हर एक कर्मेन्द्रिय सतोप्रधान स्वच्छ हो जायेगी।

27) जैसे सेकण्ड में लाइट का स्विच ऑन करने से अंधकार भाग जाता है, ऐसे स्वमान की स्मृति का स्विच ऑन करो तो भिन्न-भिन्न देह-अभिमान समाप्त करने की मेहनत नहीं करनी

पड़ती। सहज आत्म अभिमानी स्थिति बन जायेगी। यही स्थिति रूहानी प्यार का अनुभव करायेगी।

28) आत्मिक स्थिति में रहने से चेहरा कभी गम्भीर नहीं दिखाई देगा। गम्भीर बनना अच्छा है लेकिन टूमच गम्भीर नहीं। चेहरा सदा मुस्कराता रहे। जैसे आपके जड़ चित्रों को अगर सीरियस दिखाते हैं तो कहते हो आर्टिस्ट ठीक नहीं है। ऐसे आप अगर सीरियस रहते हो तो कहेंगे इसको जीने का आर्ट नहीं आता।

“अन्तर्मुखता सेफ रहने का बहुत अच्छा साधन है, अन्तर्मुखी बन बाप के प्यार में लवलीन हो जाओ तो व्यर्थ बातों से बच जायेंगे”

(गुल्जार दादी)

सभी को उड़ना तो आ गया है ना या बीच-बीच में रूक जाते हो? अभी गीत सुना - उड़ जा पंछी... क्योंकि हमको बाबा ने ज्ञान-योग, उमंग-उत्साह, हिम्मत के पंख दे दिए हैं। जो पंछी पंख वाला है वह तो उड़ने के बिना रह नहीं सकता। कई बार पंख कमजोर हो जाते हैं, उमंग-उत्साह कम हो जाता है, व्यर्थ संकल्प चलना शुरू हो जाते, फिर उड़ नहीं सकते। हम तो हैं ही पंछी, बाबा ने हमको ज्ञान योग के पंख दिए हैं। कोई भी बात आ जाए, तो बाबा के पास उड़ करके पहुंच जाओ। बाबा के पास उड़के जाने से बाबा के प्रेम में समा जायेंगे। जब प्रेम में लवलीन हो गए फिर माया क्या करेगी! बाबा ने एक बार बहुत अच्छी बात सुनाई थी। देखो, कोई ऑफिसर बहुत बिजी होते हैं, उन्हों को किसी से मिलना नहीं है तो वह क्या करते हैं! बाहर आउट का बोर्ड लगा देते हैं। होते अन्दर हैं लेकिन किसी से मिलना नहीं है, तो आउट का बोर्ड लगा देते हैं। तो बाबा भी कहते हैं तुमको माया से कोई भी काम नहीं है, व्यर्थ संकल्प से भी काम नहीं है। बाबा से ही काम है। तो आप भी अन्तरमुख हो जाओ। वह तो बाहर आउट का बोर्ड लगा देते हैं, हमारा आउट क्या है? अन्तरमुखी बन जाओ। अगर आप अन्तरमुखी बन गए, तो कोई आपको क्या कर सकता है। तो अपने को बिजी रखने के लिए अन्तरमुखता की बहुत आवश्यकता है।

देखो पूरे दिन की दिनचर्या में योग भिन्न-भिन्न प्रकार से कराते हैं, किसलिए? अन्दर आत्मा जो है ना उस रूप में स्थित

होने के लिए। इसके लिए अन्तर्मुखता का अभ्यास बहुत जरूरी है। कोई भी बात आई, अन्तरमुख हो गये तो बात खत्म। जैसे कोई बाहर से बार-बार परेशान करता हो और हम अन्दर दरवाजा बन्द करके बैठ जायें, तो सेफ हो जायेंगे ना। तो अन्तरमुखता सेफ रहने का अच्छा साधन है। बस बाबा के प्यार में लवलीन हो जाओ। बाबा का प्यार इमर्ज कैसे करो? सिर्फ दो बातें प्यार को इमर्ज कर देंगी। एक तो याद करो कि बाबा आपने हमें क्या से क्या बना दिया! अपने भिन्न-भिन्न टाइटल याद करो। दूसरा देखो कि बाबा से मुझे क्या-क्या प्राप्तियाँ हुई हैं। अगर प्राप्तियों की लिस्ट सामने लाओ तो भी बड़ी लम्बी चौड़ी है। यह दो बातें बार-बार इमर्ज करो, कभी मन नहीं लगे, योग में बिन्दी याद नहीं आये, बिन्दी घड़ी-घड़ी खिसक जाए तो बाबा का प्यार प्रैक्टिकल लाइफ है ना। चलो टाइटिल भी याद नहीं आते हैं। कभी-कभी ऐसी अवस्था होती है जो कहेंगे - हाँ बाबा ने कहा तो था - आप नूरे रत्न हो, दिलतख्त नशीन हो... और क्या कहा था? याद ही नहीं आ रहा है। कभी-कभी प्राप्तियों में भी बस सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम... बस, पूरा हो गया। तो कभी ऐसा हो सकता है। लेकिन जब आपको व्यर्थ संकल्प बहुत ही सताते हैं, ड्रामा में किसी से कोई हिसाब-किताब है, तो बहुत व्यर्थ संकल्प चलते हैं। कई बार ऐसी बीती हुई कहानियाँ भूलती नहीं हैं। वैसे डिस्कोर्स भूल जायेगा, पूरी मुरली भूल जायेगी लेकिन कहानियाँ नहीं भूलेंगी। तो हमारी

कहानियां कौनसी हैं? यह मधुबन की कहानी याद करो। साकार में है ना। मधुबन में तो सहज पहुँच जायेंगे। साकार वतन की बात है। मधुबन में गये थे, दादी से मिले, ये हुआ, क्लास हुआ फिर ये हुआ, ये हुआ ये तो सहज याद आ सकता है ना। जब ज्ञान में आये ब्रह्माकुमार कुमारी बने, उस समय की अपनी कहानियां याद करो या कोई ऐसी बात आपके जीवन में हुई हो, वह कहानियां अपनी बीती हुई याद करो। व्यर्थ संकल्प को खत्म करो क्योंकि संकल्प जो है ना, वो संकल्प से ही खत्म होगा। जैसे कहते हैं ना, कांटा कांटे से ही निकलता है। तो संकल्प जो होता है उसको संकल्प ही ठीक कर सकता है। व्यर्थ संकल्प आने का जो दरवाजा है, वह आपको पता है? व्यर्थ संकल्प आने का दरवाजा है क्यों, क्या, कैसे... इसलिए बाबा कहते व्हाई-व्हाई नहीं करो, फ्लाई करो। क्यों, क्या करने से क्यू लग जाती है। जब व्यर्थ संकल्प चलता है तो पहले क्वेश्चन आता है, यह क्यों हुआ...कैसे हुआ! कहाँ हुआ... इससे व्यर्थ संकल्पों की क्यू लग जाती है। इस फाटक को बन्द करो। सभी त्रिकालदर्शी हो ना! तो तीनों कालों को जानने वाला, वर्तमान में क्यों क्या कैसे करेगा! तो ऐसे क्वेश्चन मार्क नहीं लगाओ, फुलस्टॉप। क्यों हुआ! चलो हिसाब-किताब है, संस्कार हैं, परवश है, उसके ऊपर भी रहम करो। कोई भी विघ्न आता है, तो यही कहते हैं ना – यह मेरे को क्यों कहा, यह है कौन! पांच शब्द होते हैं - क्यों, क्या, कौन, कब, कहाँ...। कब तक यह चलेगा, कब तक ये करेंगे... तो मम्मा कहती थी काँ, काँ कौन करता है? कौआ। तो अगर तुमने क्या-क्या किया तो तुम कौआ बन गये। दूसरा होता है हंस, कितना स्वच्छ सफेद सफेद होता है। तो मम्मा कहती थी तुम तो होलीहंस हो, सिर्फ हंस नहीं हो, तुम होलीहंस हो। हंस की विशेषता है, उसमें परखने की शक्ति होती है। कंकड और मोती को अलग-अलग कर देता है। कभी कंकड को अन्दर नहीं लेगा, मोती ले लेगा। हमारी तो ड्रेस भी देखो हंस के समान सफेद है। जैसे यह वस्त्र सफेद हैं वैसे मन भी सफेद है। मकान का रंग भी सफेद है। मन, कपड़ा, मकान सब स्वच्छ ही स्वच्छ है। तो हंस माना स्वच्छ। साकार में बाबा को स्वच्छता बहुत पसंद थी। तो मन के भी स्वच्छ, शरीर के भी स्वच्छ, कपड़े भी स्वच्छ। तो इतने तक हमको स्वच्छ रहना है।

एक बार बाबा ने दो शब्द बोले थे – एक स्टॉप, दूसरा स्टॉक। स्टॉप करो तो शक्तियों का, गुणों का स्टॉक जमा हो

जायेगा। अगर स्टॉक नहीं होगा तो स्टॉप भी नहीं लगा सकेंगे। लगायेंगे बिन्दी लेकिन बन जायेगा क्वेश्चन मार्क। बाबा ने हम सबको यह कितना अच्छा गोल्डन चांस दिया है, यहाँ कोई जिम्मेवारी भी नहीं है। एक ही काम है, ज्ञान सुनो, योग लगाओ.. तो बहुत अटेन्शन रखो। जैसे बाबा का प्यार मुरली से है। आप का प्यार अगर बाबा से है, तो मुरली से भी जरूर प्यार होगा। पहले-पहले जब हम पार्टी लेकर आते थे और तैयार होकर बाबा से मिलने जाते थे। तो बाबा कहता था बच्चे आज की मुरली पढ़ करके आओ फिर बाबा मिलेगा। बाबा का मुरली के ऊपर बहुत ध्यान होता था। आजकल तो कोई पूछता ही नहीं है कि मुरली पढ़ी या नहीं। मुरली में इन्ट्रस्ट लाने के लिए बहुत बातें हैं, मुरली सुनते-सुनते किसी को अगर झुटका आ जाता है तो जरूर उसे मुरली सुनने की विधि का पता नहीं है। जब भी आप मुरली सुनते हो तो यह समझते हो ना कि बाबा मेरे लिए आया है। मैंने बाबा को याद किया, बाबा मुरली सुनाओ तो बाबा मेरे लिए आया है। कहाँ से आया है? परमधाम से, इतना दूर से बाबा हमारे लिए रोज़ आता है पढ़ाई पढ़ाने के लिए। तो कितना महत्व होना चाहिए और बाबा मेरे से पर्सनल बात कर रहा है। पर्सनल मेरे लिए बाबा आया है। जैसे अव्यक्त बाबा आता है, तो सोचते हो ना बाबा एक अक्षर भी मेरे लिए पर्सनल बोले। महत्व होता है ना। दिल होती है ना कि हम भी स्टेज पर जायें, बाबा हमें दृष्टि देवें, हमारे से दो शब्द बोले और इतना तीन पेज रोज़ बोलता है। यह भी तो पर्सनल बात करता है ना। मैं अर्जुन हूँ। युद्ध के मैदान में घोड़े हाथी सेनायें सब खड़ी हैं, और भगवान अर्जुन को ज्ञान दे रहे हैं। हे अर्जुन, हे अर्जुन कह रहा है। तो हम ही अर्जुन हैं। यह शास्त्रों में जो हे अर्जुन लिखा है माना मैं न्यारी आत्मा हूँ। मुझ आत्मा के कारण बाबा आया है और मेरे से पर्सनल बात कर रहा है। मुरली जनरल क्लास में नहीं चला रहा है, बाबा मेरे से बात कर रहा है। बाबा कितने बार बीच में बोलते हैं बच्चे, बच्चे ... यह किसको कह रहा है। मेरे से बात कर रहा है। अगर आप इस विधि से मुरली सुनेंगे तो कभी मुरली सुनते झुटका नहीं आयेगा। मुरली सुनते ऐसे लगेगा जैसे कहाँ कहाँ की सैर करके आये। बाबा कभी सूक्ष्मवतन में ले जाता है, कभी परमधाम में ले जाता है। कभी सेवा के लिए भक्तों के पास ले जाता है, कभी दुःखी आत्माओं की बात करता है। तो आप बुद्धि से वहाँ पहुँच जाओ लेकिन पंख ठीक होने चाहिए तभी तो उड़ सकेंगे ना।

“हेल्दी रहना है तो कभी अधैर्य वा अशान्त नहीं होना”

(दादी जानकी 8-9-04)

दुनिया में आत्मायें तो अनगिनत हैं, गिनती नहीं कर सकते हैं, इतनी तो आत्मायें हैं जो लाखों मरते हैं तो पैदा फिर उनसे ज्यादा होते हैं। ऊपर से भी आत्मायें आती रहती हैं तब तो पॉपूलेशन बढ़ती रहती है। परन्तु भगवान ने उसमें से चुन-चुन करके हम सबको निकाला है। जिन्होंने मेरा-मेरा छोड़ा है उसको भगवान कहता है यह मेरे हैं। जिसने बाबा को तेरा-तेरा कहा उनका बाबा मेरा हो गया, वो कितनी गिनती वाली आत्मायें हैं। हम यह नहीं कह सकते कि बाबा क्या करूँ मेरी नेचर ऐसी है, नहीं। यह नेचर कहाँ से लाई? संस्कार ऐसा है, तो क्या वह रावण का संस्कार है? अगर थोड़ी सी कुछ बात हो जाये तो बाबा कहता है यह ऐसा संस्कार मेरे बच्चे का नहीं है।

वैल्यूज को जन्म देने वाले कौन, पालना करने वाले कौन? स्त्रीचुअलिटी। हेल्थ भी अच्छी कैसे होगी? वैल्यूज से। जरा-सा भी आप अधैर्य न बनो, अशान्त न बनो तो सदा हेल्दी हैं। कुछ हो जाये तो भी शान्ति रखो तो हेल्थ ठीक हो जायेगी। या कोई न कोई निमित्त ठीक करने वाला भी आ जायेगा, बुलाने की जरूरत नहीं है। हम ठीक रहेंगे तो सब ठीक हो जायेगा। थोड़ा-सा हिसाब-किताब है, पर कोई कर्मभोग है तो चिल्लायेगे। कोई कड़ा हिसाब-किताब है, कुछ भूल किया है तो उसकी भोगना है, तो दुःख होगा। सिर में दर्द ऐसा पड़ेगा जो 12 गोलियों से भी नहीं उतरेगा क्योंकि हमने कुछ किया है, फिर वो रियलाइजेशन होती है तो वो उतर जाता है। यह भी एक खेल है, यह भी अन्दर की बात है कि हमारी हेल्थ बिगड़ती किस कारण से है, सुधरेगी कैसे? तो अन्दर स्त्रीचुअल लाइट यानि समझ जो है उसका हेल्थ पर असर बहुत अच्छा होता है। पीस होती है पॉजिटिव से, तो पॉजिटिव है अमृत और निगेटिव है जहर। जहर का एक ड्रॉप भी पड़ा, यानि एक भी निगेटिव संकल्प आया तो पॉजिटिव में जो पीस है, प्युरिटी है, पॉवर है वो सब गई। और वो एकदम ढीला पड़ जायेगा। जरा भी नफ़रत की निगाह हुई, जरा भी दृष्टि खराब हुई तो मानो यह जहर है।

अपने को समझाना, सम्भालना, अपनी केयर करना मुख्य बात है। ऐसे एक दो की केयर करना यह भी बड़ा पुण्य का काम है। अच्छी-अच्छी बातों का शेयर करके उसको उल्हास-उमंग में ले आना और बीमारी भुलवा देना या कोई प्रेरणा देना,

यह है कमाल। हेल्थ नहीं तो गुणों की वेल्थ भी नहीं तो हैप्पीनेस कहाँ से आयेगी। धन कोई सुखी नहीं बनाता है, गुण सुखी बनाता है, तो अपने आपको सम्भालना है, स्त्रीचुअलिटी की जागृति आई है तो अपने आपको सम्भालो। ऐसा सम्भालो जो आपको सम्भालने की किसको चिन्ता न लगे। अच्छा। ओम् शान्ति।

2) सेन्सीटिव नेचर छोड़ो, इनोसेंट बनो

सेन्सीटिव नेचर दो प्रकार की है, एक पाजिटिव रूप में लेवें तो बहुत जल्दी आगे बढ़ सकते हैं। दूसरा - सेन्सीटिव नेचर कई बार बहुत दुःख देती है, सेन्सीटिव नेचर वाले जल्दी उतावले हो जायेंगे। किसी के भाव को भी नहीं समझेगे। उनमें धीरज नहीं रहता। समझने की कोशिश भी नहीं करते इससे बहुत नुकसान हो जाता है। अभी उसे परिवर्तन करना है। किसी भी बात में सिद्ध करने की कोई जरूरत नहीं है।

ज्ञानी योगी तू आत्मा का वास्तव में चिन्ह यह है जो सेकण्ड में वायब्रेशन से भी डिटैच कर लेवे, इशारे से कैच कर लेवे। जैसे वायरलेस कैच कर लेता है, अजब लगता है आवाज अन्दर घुस जाता है। ऐसे ही जितना हम साइलेन्स में जाते हैं, बुद्धि महीन होती जाती है जो और कोई वायब्रेशन अन्दर घुस नहीं सकते। कोई की कैसी भी भावना हो, वह अन्दर टच नहीं कर सकती। इसके लिए बुद्धि इतनी स्वच्छ, साफ, क्लीन हो जो हर बात कैच कर सकें। दिन प्रतिदिन समय ऐसा आ रहा है, बाबा के दिल में जो हमारे प्रति हो, वो सेकण्ड में कैच कर लेवें। दूसरा - एक दो की भावनाओं को भी कैच कर लेवें। सबके प्रति शुभ भावना, कल्याण की भावना रहे। भले उनके अन्दर कुछ और भी हो, परन्तु मेरी कल्याण की भावना रहे, ऐसी हमारी नेचर हो जाए।

तीसरा - सेवा में आत्माओं को जो चाहिए वो फट से मिलता जाए। जो चीज़ साइंस से निकलती है वो चीज़ सिर्फ उसके लिये थोड़ेही है, वो सबके लिये यूज हो जाती है। ऐसे हमारे सारे ब्राह्मण परिवार में हो जाए तो बड़ा अच्छा हो जायेगा। कोई भी बात में किसी भी घड़ी, किसी के साथ भी यह ख्याल नहीं होता है कि कहूँ या ना कहूँ? पता नहीं क्या रियेक्शन

होगा... तो यह जो ख्याल होता है ना, यह भी तो एक प्रकार का साधारण वा व्यर्थ ख्याल है। इससे भी फ्री हो जाये तो ख्याल श्रेष्ठ और कामलायक होंगे। इसमें एक तो याद में रहो, दूसरा सर्विस में आपस में सहयोग हो, उससे बाहर वाले लोग भी मानेंगे, यह गैरन्ती है। जैसे हमारे में मनाने की, मानने की शक्ति वा अक्ल आई है ना, वैसे उनमें भी आयेगी। अभी कारोबार में कहाँ पर भी किसके साथ भी आप बात करेंगे तो आपको यह प्रूफ मिलेगा। समझो मैं प्यार से समझ से स्वीकार किया, मुझे कोई क्वेश्चन नहीं है। तो दूसरे भी कुदरती कहते हैं मेरे अन्दर कोई क्वेश्चन नहीं है। समझ वाली बात लगती है, कोई ऐसी बात ही नहीं है जो क्वेश्चन उठाऊं।

हिम्मत, सत्यता और विश्वास तीनों एक जैसे हों। हिम्मत है लेकिन सत्यता की थोड़ी कमी है। सत्यता है तो हिम्मत की कमी है। हिम्मत और सत्यता है तो आत्म-विश्वास या बाबा में विश्वास नहीं है। लेकिन जब तीनों एकदम पाँवर में हो जाते हैं, तो यह लाइफ अच्छी लगती है। चलो अपने में विश्वास नहीं है, तो बाबा करेगा यह तो विश्वास का आवाज हो। तो तीनों इकट्ठे होने से सब सहज हो जाता है, कोई बड़ी बात नहीं है। हुआ ही पड़ा है। तो यह एक हमारा अन्दर सोचने का तरीका जैसा होगा, हमारे बोल जैसे होंगे, उसमें सत्यता और विश्वास काम करेगा। आजकल बहुत सोचने की आवश्यकता नहीं है, रखो भगवान पर, करने वाला बैठा है। तो अन्दर से अभी सेन्सीटिव नेचर को छोड़के इस तरह से बनो। तो क्वीक पुरुषार्थ करके सफलता को पाओ और दूसरों को भी सफलता देने में मदद करो। तो सदा सफलता देख कहेंगे कि यह मेरा भाग्य है। पुरुषार्थ करके भाग्यवान बने तो जरूर सफलता मिलेगी। ऐसे नहीं जो भाग्य में होगा... नहीं। तो सोचने के तरीके को बड़ा अच्छा रॉयल, सुन्दर बनाना है।

बाबा का चेहरा देखो कितना मीठा, कितना भोला एकदम मोह लेगा, हमारा चेहरा भी ऐसा कैसे बनें! जैसे छोटा बच्चा बिल्कुल इनोसेन्ट है एकदम प्युअर यानि शुद्ध है, परन्तु यह तो पता है कि इसके संस्कार तो पूर्व जन्म के हैं। भले छोटा किशोर है, बच्चा है.. उसको क्या पता काम, क्रोध क्या होता है? विकार कैसा होता? बच्चा ब्रह्म ज्ञानी समान है। परन्तु पिछले संस्कार तो उसमें भी हैं ना। हम जब बोलते हैं कि मैं ईश्वरीय सन्तान हूँ, भोलेनाथ बाबा की बच्ची/बच्चा हूँ, तो वो रूप ऐसा भोला बन जाता है। नहीं बनता है तो बन जाना चाहिए। वो पुराना सब गया, इसकी हूँ... तो जैसे वो है, ऐसे भोलेपन में सयानापन

बहुत है। भोलेपन में रॉयल्टी बहुत है। कई भोले होते हैं परन्तु रॉयल नहीं होते हैं, खाने-पीने की भी रॉयल्टी नहीं होती। लेकिन भोलापन सत्यता, रूहानियत, स्नेह, प्यार, सच्चाई... जैसे सबमें सम्पन्न बना देता है। तो अभी ज्ञान, योग, धारणा, सेवा सब आत्मा के अन्दर शक्ति भरी है। दूसरी तरफ जहाँ से भरी है, उन जैसे संस्कार भी बनते जा रहे हैं। उसमें इतनी प्यार भरी शक्ति है जो जरूरत नहीं है हमको ज्यादा बुद्धि लड़ाने की, चलाने की।

योगबल क्या चीज है? प्रैक्टिकल हरेक देखे जितना हम बाबा को याद करते हैं, उतनी सहनशीलता है? उतना समेटने की, सामना करने की शक्ति है? तो यह क्या है, अगर आई तो यह योगबल है ना। शक्ति सामना कर लेती है, हम तो याद में रहेंगे बाकी तो हम कुछ नहीं करते हैं। हमको बाबा ने एक मंत्र दे दिया तुम बच्चे याद करो। फिर यह नहीं कहेंगे मुझे सहन करना पड़ता है। क्या सहन करना पड़ता है? चलो, इसका स्वभाव थोड़ा ऐसा है, तो इसमें सहन की क्या बात है! आज नहीं, कल ठीक हो जायेगा, कोई बड़ी बात नहीं है। अगर मैं सोचूँ इसका बड़ा तेज स्वभाव है, बड़ा वो है यह है, जब याद में बैठते हैं, इस प्रकार से संकल्प चलने लगे कि इसको मैं 10 साल से जानता हूँ, यह न कभी परिवर्तन हुआ है, न होगा... अगर यह सोचा तो सहन करना पड़ता है, इसलिये सोचो ही नहीं ज्यादा, तो यह अक्ल है ना। मैं याद में रहूँ, शान्त रहूँ, प्रेम में रहूँ तो वो भी नेचर चेन्ज हो जायेगी। बाकी मैं ही परेशान हो जाऊँ, तो न मैं परेशान होना छोड़ती हूँ न वो छोड़ता है। तो हम कभी फालतू सोचते हैं परन्तु है कुछ भी नहीं। तो जब हम याद में रहते हैं तो हमको परेशानी नहीं है, खुद के लिये उतना समय तो अच्छा हो गया, फायदा हो गया; दूसरा वह बदल गया तो उसको भी फायदा हो गया। तो याद की शक्ति बढ़े कैसे? अपने को व्यर्थ संकल्पों से फ्री रखो, तो सब शक्तियाँ काम करेंगी।

हम अपना काम शुभ भावना, सकारात्मक सोचने का करें तो वो कभी भी चेन्ज हो जायेगा, उसमें हम क्यों सोचें। पर यह विश्वास जरूर हो कि एक घड़ी जरूर आयेगी। उसमें यह भक्ति वाला मिसाल याद रखना चाहिए। तपस्या करते रहो, कभी तुम्हें भगवान मिल जायेगा। कितने समय के बाद मिलेगा, वह पता नहीं है। लेकिन कुछ किया और सामने भगवान खड़ा हो गया, ऐसे कभी होता है लेकिन इतनी भावना तो रखो, तो हो ही जायेगा। कब होगा, कब होगा... ऐसा सोचते रहेंगे तो कभी भी नहीं होगा। इसलिये सिर्फ इसमें थकना नहीं है। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

1) बाबा आया है हम बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनाने। तो गुण अलग हैं, कलायें अलग हैं। जैसे आज किसी को लिखने की कला है, कोई को भाषण करने की कला है, कोई को पालना करने की कला है, कोई को सन्तुष्ट करने की कला है.... इन कलाओं से भी हम श्रेष्ठ बनते हैं। यह कलायें नम्बरवार अपने-अपने वरदानों से मिलती हैं।

2) मायाजीत, जगतजीत बनने के लिए सर्वशक्तियों और सर्वगुणों से सम्पन्न बनना है। अगर कोई न कोई शक्ति की कमी है तो माया किसी न किसी रूप में योग खण्डित करती रहेगी फिर अखण्ड योगी भी नहीं बन सकते हैं। हम सबको बाबा इस वक्त जो कहते हैं कि बच्चे तुम्हें एवररेडी बनना है तो इसके लिए हर एक को शक्तिशाली, बलवान बनना है।

3) हमारी संगमयुग की यह लाइफ बहुत वैल्युबुल है, जितना-जितना हम अपने जीवन में वैल्युज धारण करते उतना वैल्युबुल बनते हैं। जैसे 56 गुण गाये जाते, ऐसे 56 अवगुण भी हैं, इसकी भी लिस्ट बनाओ। जैसे ईर्ष्या है, आवेश है... इनके भी बहुत बाल बच्चे हैं। तो देखो कितने गुणों की माला मैंने धारण की है और अभी तक कितने अवगुण रहे हुए हैं?

4) बाबा ने हर मुरली में अनेक स्वमान दिये हैं, वरदान दिये हैं, वह भी लिखो और चेक करो कि कौन-कौन से स्वमान सदा स्मृति में रहते हैं और कौन-कौन से वरदान मैंने बाबा से लिये हैं? किस वरदान की कमी मेरे में है? उसका कारण और निवारण निकालो।

5) रोज़ हर बात को कम से कम एक घण्टा मनन करो, चिन्तन करो। ऐसी 100 प्वाइंट्स पहले नोट करो फिर 100 दिन में 100 घण्टा मनन-चिन्तन करके उसमें सम्पन्न बनो। 100 घण्टे के योग से कमजोरियों को समाप्त करके विजयी बनो, इसके लिए एकाग्रता का अभ्यास करो। एक सेकेण्ड में संकल्प को स्टॉप कर लो और उपराम हो जाओ, इस देह से उड़ जाओ, वतन में बाबा के स्वीट साइलेन्स होम में बैठ जाओ, तब यह जीवन प्यारी-न्यारी बनेगी।

6) अब तक सेवायें बहुत की, सेवाओं का बहुत अच्छा शौक है लेकिन अब मेवा खाओ। मेवा है पहले खुद को कम्पलीट बनाओ फिर पूछेंगे कि हम मुक्त कहाँ तक किन-किन बातों में बने हैं? अभी पुराने संस्कारों से ही मुक्त नहीं तो जीवनमुक्ति का मेवा क्या खायेंगे? जब संस्कारों से मुक्त बनो तो जीवनमुक्ति का मीठा मेवा भी मिले।

7) बाबा ने कहा है कि तुम्हें सर्वश त्यागी बनना है तो उसकी डिटेल निकालो – सर्वश त्यागी किसे कहा जाता है? पवित्रता की गुह्य भाषा क्या है? सत्यता की शक्ति किसे कहा जाता है? उसे भी क्लीयर करो। क्रोध मुक्त बनने के लिए, क्रोध आने के कारण और उसका निवारण निकालो। हमारे सेन्टर पर सेवा में किस प्रकार के विघ्न हैं? वह विघ्न क्यों है? उन विघ्नों का कारण क्या है और फिर उनका निवारण क्या है? हमारी आपस में एकता क्यों नहीं होती? मतभेद क्यों होता? उसका कारण क्या है? हमें बाबा को प्रत्यक्ष करना है तो हम कैसा वातावरण बनायें, जो वातावरण बाबा को प्रत्यक्ष करे? हमारे में योग की कमी क्यों है? उसी कमी को हम किस तरह से अटेन्शन रख करके भरें जो हमारी योगयुक्त स्थिति हो? हमारे में सुस्ती क्यों है? अलबेलापन क्यों है? और इससे मुक्ति कैसे हो? यह सब छोटे कारण हैं लेकिन हमारे जीवन के बन्धन हैं। इस प्रकार के बन्धनों की लिस्ट निकालो। ईश्वरीय मर्यादायें क्या है, जिनके टूटने से डिस-सर्विस होती है? बाबा श्रीमत किसको कहते हैं? हम श्रीमत का पालन करते हैं या नहीं? नहीं करते तो क्यों? श्रीमत का पालन करना जरूरी क्यों है? इस प्रकार की टॉपिक पर रूह-रूहान करो और उसके कारण और निवारण निकालो तो आप लोगों को बहुत मज़ा आयेगा और उन बातों से आप निवृत्त भी हो जायेंगे। हमारी यह लाइफ ट्रस्टी लाइफ है? किसी भी चीज़ में आसक्ति तो नहीं है? थोड़ा भी किसी देहधारी से मोह तो नहीं है? खुद से अथवा दूसरों से हम नष्टोमोहा बने हैं? ऐसी प्वाइंट्स पर डिस्कस करो तो भरपूर हो जायेंगे। अच्छा।